Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

APG–1003

M.A. (Previous) Examination, 2021

HINDI

Paper - III

(प्राचीन काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ प्रत्येक 2

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) 'मनहुँ कला ससिभान कला सोलह सौ बन्निय' पंक्तियों में किसे सम्बोधित किया गया है ?

   (ii) 'जानि चतुरदस अंग षट' में कवि ने पद्मावती की किस विशेषता को बताया है ?

   (iii) नरपति नाल्ह का परिचय दीजिए।

(iv) 'बीसलदेव रासो' में कौन-कौनसे रसों का प्रयोग हुआ है ?

(v) 'विद्यापति पदावली' के काव्य रूप पर टिप्पणी लिखिए।

(vi) क्या विद्यापति एकेश्वरवादी थे ?

(vii) 'साखी' शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(viii) 'संत' शब्द से कबीर का क्या अभिप्राय है ?

(ix) सूफी काव्यों के कथानकों का प्रमुख आधार क्या रहा है ?

(x) 'पद्मावत' के काव्य रूप पर विचार कीजिए।

खण्ड–ब प्रत्येक 8

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

बज्जिय घोर निसांन रान चौहान चहौं दिसि।

सकल सूर सामंत समरि बल जंत्र-मंत्र तिस॥

उट्ठि राज प्रथिराज बाग मनौं लग्ग बीर नट।

कढत तेग मन बेग लगत मनौं बीजु झट्ट घट॥

थकि रहे सूर कौतुग गगन रग न मगन भई सोनघर।

हदि हरषि वीर जग्गे हुलसि हुरेउ रंगन बस्त वर॥

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

दिन रायां रितु पालटी।

म्हाकउ मूरष राउ न देषइ आइं।

जीवउं तउ जोबन सही।

फरहरइ चिहुं दिसि बाजइ छइ बाइ।

म्हाकी कनक काया माहे फेरबी आंण॥

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

देख-देख राधा रूप अपार।

अपुरुब के बिहि आनि मिला ओल खिति तल लावण सार।

अंगहि अंग अनंग मुरछाइत हेरए पड़ए अथीर।

मनमथ कोटि मथन करु जे जन से हेरि महि मधि गीर।

कत-कत लखिमी चरन तल न ओछए रंगिनि हेरि विभोरि।

करु अभिलाख मनहिं पद पंकज अहोनिसि कोर अगोरि॥

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।

लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार॥

सतगुरु सांचा सूरिवां, सबद जु बाह्या एक।

लागत ही मैं मिलि गया, पड़या कलेजे छेक॥

पीछे लागा जाइ था लोक वेद के साथि।

आगे थै सतगुरु मिलिया, दीपक दिया हाथि॥

6. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मन रे तन कागद का पुतला।

लागै बूंद बिनसि जाइ छिन मैं, गरब करै क्यूं इतना।

माटी खोदहिं भींत उसारै, अंध कहै घर मेरा।

खोट कपट करि यहु धन जोर्‌यो, लै धरती मैं बाड्‌यौ।

रोक्यौ घटि सांस नहीं निकसै, ठौर-ठौर सब छाड़यौ॥

कहै कबीर नट नाटिक थाके, मंदला कौन बजावै।

गये पषनियाँ उझरी बाजी, की काहु कै आवै॥

7. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

पुनि आए सिंहलगढ पासा। का बरनौं जनु लाग अकासा।
तरहिं करिन्ह वासुकि कै पीठी। ऊपर इन्द्रलोक पर दीठी॥
परा खोह चहुं दिसि अस बांका। काँपै जांघ, जाइ नहिं झांका॥
अगम असूझ देखि डर खाई। परै सो सपत पतारिहिं जाई॥
नव पौरी बाँकी नव खंडा। नवौ जो चढै जाइ बरम्हंडा॥
कंचन कोट जके नग सीसा। नखतहिं भरी बीजु जन दीसा॥
लंका चाहि ऊँच गढ ताका। निरखि न जाइ, दीठि तन थाका॥
हिय न समाइ दीठि नहिं जानहुँ ठाढ सुमेर
कहुँ लगि कहौं ऊँचाई, कहँ लग बरनौं फेर॥

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

कुहुकि-कुहुकि जस कोइल रोई। रकत, आँसु घुँघुची बन बोई॥
भइ करमुखी नैन तन राती। को सेराव ? विरहा दुख ताती॥
जहँ-जहँ ठाढ़ि होई बनवासी। तहँ-तहँ होइ घुघुचि के रासी।
बूंद-बूंद महँ जानहुँ जीऊ। गुंजा गूँजि करै पिउ पीऊ॥
तेहि दुख भए परास निपाते। लोहू बूड़ि उठे होइ राते॥
राते बिम्ब भीति तेहि लोहू। परवर पाक, फाट हिय गोहू॥
देखौं जहाँ होई सोइ राता। जहाँ सो रतन कहे को बाता ?
नहिं पावस ओहि देसरा, नहिं हेवंत बसंत।
ना कोकिल न पपीहरा, जेहि सुनि आवै कंत॥

खण्ड–स प्रत्येक 20

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)।

9. 'पद्मावती समय' की रस-योजना पर विचार कीजिए।

10. बीसलदेव रासो की नायिका राजमती का चरित्र-चित्रण कीजिए।

11. गीतिकाव्य की दृष्टि से विद्यापति पदावली का मूल्यांकन कीजिए।

12. कबीर के रहस्यवाद पर निबन्ध लिखिए।